ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23035
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23035

*CONFERENCE PAPER*

# रूढ़ि से नेतृत्व तक: हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महिला स्वायत्तता का विश्लेषण

**कु. श्रेया सुचेता पटवर्धन**

1. रिसर्च स्कॉलर गुरु – पं. नित्यानंद हळदीपूर श्री.ना.दा.ठाकरसी महिला विद्यापीठ, चर्चगेट, मुंबई मार्गदर्शक – प्रा. डॉ. संगीता बापट (संगीत विभाग प्रमुख).

## Manuscript Info

***Manuscript History***
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

***Key words:-***
महिला नेतृत्व # रूढ़ि-विरोध # सांगीतिक साधना # परंपरा और परिवर्तन # स्त्री अस्मिता

## Abstract

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की परंपरा में महिला कलाकारों की बदलती भूमिका और नेतृत्व-संभावनाओं का अध्ययन करता है। विशेषतः अन्नपूर्णा देवी और केसरबाई केरकर के जीवन और कृतित्व को केंद्र में रखते हुए यह विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार इन दोनों विदुषियों ने परंपरागत रूढ़ियों को चुनौती दी और सांगीतिक स्वायत्तता का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत किया। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की संरचना घराना-व्यवस्था और गुरु–शिष्य परंपरा पर आधारित रही है, जिसमें लंबे समय तक पुरुष वर्चस्व प्रमुख रहा। ऐसे परिवेश में महिला कलाकारों के लिए केवल कलात्मक दक्षता पर्याप्त नहीं थी; उन्हें सामाजिक सम्मान, नैतिक वैधता और सांगीतिक अधिकार—तीनों स्तरों पर स्वयं को सिद्ध करना पड़ता था। केसरबाई केरकर ने जयपुर-अतरौली घराने की जटिल रागदारी को आत्मसात कर सार्वजनिक मंच पर असाधारण अधिकार स्थापित किया और यह प्रमाणित किया कि गंभीर शास्त्रीय गायन में स्त्री-प्रतिभा किसी भी प्रकार से सीमित नहीं है। दूसरी ओर, अन्नपूर्णा देवी ने मैहर घराने की गहन साधना को शिक्षण और गुरु–शिष्य परंपरा के माध्यम से आगे बढ़ाते हुए यह दर्शाया कि नेतृत्व केवल दृश्यता में नहीं, बल्कि ज्ञान-संरक्षण और परंपरा-संवर्धन में भी निहित है। यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि महिला स्वायत्तता परंपरा के विरोध में नहीं,

*"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."*

**Corresponding Author:- कु. श्रेया सुचेता पटवर्धन**
**Address:-** रिसर्च स्कॉलर गुरु – पं. नित्यानंद हळदीपूर श्री.ना.दा.ठाकरसी महिला विद्यापीठ, चर्चगेट, मुंबई मार्गदर्शक – प्रा. डॉ. संगीता बापट (संगीत विभाग प्रमुख).

बल्कि उसके भीतर आत्मनिर्णय और साधना के माध्यम से विकसित होती है। इन दोनों विदुषियों ने सिद्ध किया कि रूढ़ियों से मुक्ति संघर्ष का परिणाम अवश्य है, किंतु उसका आधार अनुशासन, आत्मविश्वास और सांगीतिक सत्यनिष्ठा है। इस प्रकार, उनका योगदान हिंदुस्तानी संगीत में महिला नेतृत्व के स्थायी और प्रेरक प्रतिमान के रूप में स्थापित होता है।

## Introduction:-

**भारतीय सांस्कृतिक चेतना में संगीत का स्थान केवल कलात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह ज्ञान, साधना और आध्यात्मिक अनुशासन की निरंतर परंपरा का वाहक रहा है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत विशेष रूप से ऐसी परंपरा है, जिसमें राग-विस्तार, तान-रचना, लय-संयोजन और भाव-अभिव्यक्ति के माध्यम से एक सूक्ष्म बौद्धिक एवं भावात्मक संसार निर्मित होता है। किंतु इस सांगीतिक संरचना के भीतर शक्ति-संबंधों, सामाजिक पदानुक्रम और लिंग-आधारित भूमिकाओं की भी एक जटिल व्यवस्था विद्यमान रही है। ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो स्त्रियों की उपस्थिति संगीत परंपरा में निरंतर रही, परंतु आधुनिक काल में सामाजिक पुनर्गठन और नैतिक मानकों के परिवर्तन के साथ उनकी भूमिका सीमित और नियंत्रित होती चली गई। शास्त्रीय संगीत के सार्वजनिक मंच, संस्थागत संरचनाएँ और घराना-व्यवस्था प्रायः पुरुष नेतृत्व के अधीन रहे। ऐसे परिदृश्य में महिला कलाकारों के लिए केवल साधना पर्याप्त नहीं थी; उन्हें अपनी वैधता, सम्मान और अधिकार की स्थापना भी करनी पड़ती थी।**

**इसी संदर्भ में विदुषी अन्नपूर्णा देवी तथा विदुषी केसरबाई केरकर का जीवन और कृतित्व विश्लेषण योग्य बन जाता है। इन दोनों ने परंपरा को अस्वीकार किए बिना, उसके भीतर रहते हुए उसकी सीमाओं का पुनर्संयोजन किया। एक ने मौन, तपस्या और गुरु-परंपरा के संरक्षण द्वारा नेतृत्व का अंतर्मुख रूप निर्मित किया, जबकि दूसरी ने सार्वजनिक मंच पर जटिल रागदारी में प्रावीण्य सिद्ध कर शास्त्रीय अधिकार का प्रत्यक्ष प्रतिमान प्रस्तुत किया। यह शोध-पत्र इसी द्वंद्वात्मक प्रक्रिया का अध्ययन करता है कि किस प्रकार स्त्री-स्वायत्तता परंपरा के विरुद्ध संघर्ष मात्र नहीं, बल्कि उसी के भीतर आत्मनिर्णय, अनुशासन और सांस्कृतिक प्रतिबद्धता के माध्यम से विकसित होती है। इस प्रकार, यह अध्ययन हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महिला नेतृत्व की पुनर्व्याख्या का प्रयास है।**

**विदुषी अन्नपूर्णा देवी (उस्ताद अल्लाउद्दिन खान की कन्या और ज्येष्ठ शिष्या):-**

**भारतीय शास्त्रीय संगीत क्षेत्र की अत्यंत ख्यातनाम, किंतु उतनी ही गूढ़ और अलिप्त व्यक्तित्वों में से एक थीं विदुषी अन्नपूर्णा देवी। वे उस्ताद अल्लाउद्दिन खान की सुपुत्री तथा मैहर घराने की परंपरा की महान वारिस थीं। अपने शिष्यों के माध्यम से उन्होंने विश्वभर में भारतीय संगीत का प्रभाव प्रसारित किया। एक अद्वितीय गुरु के रूप में उनका कार्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।**

**१. शास्त्रीय वाद्य-संगीत में योगदान:-**

**अन्नपूर्णा देवी का मुख्य वाद्य 'सुरबहार' था, जो गंभीर स्वर-गुण वाला वाद्य माना जाता है। उन्होंने अल्पायु से ही अपने पिता से संपूर्ण और कठोर तालीम प्राप्त की। उनका वादन सामान्य जन-समक्ष बहुत कम आया, किंतु कुछ विशिष्ट संगीत-सभाओं, आकाशवाणी के ध्वनि-मुद्रणों तथा उनके शिष्यों के वादन के माध्यम से उनके संगीत की गहनता प्रकट होती है। उनका वादन विशेष रूप से रागदारी के गहन अध्ययन, विलंबित लय में राग की विलक्षण प्रस्तुति तथा तंत्र, लय और भाव के सूक्ष्म एवं सुरेल समन्वय के लिए प्रसिद्ध था। वे अत्यंत संयमी और आत्माभिमुख वादक थीं। उनके लिए संगीत बाह्य प्रदर्शन नहीं, बल्कि आत्मसाधना का माध्यम था।**

२. गुरु के रूप में कार्य:-

विदुषी अन्नपूर्णा देवी का सबसे बड़ा योगदान उनका गुरु-स्वरूप है। वे अत्यंत कठोर, किंतु समान रूप से स्नेहमयी गुरु थीं। उन्होंने पंडित हरिप्रसाद चौरसिया, पंडित नित्यानंद हल्दीपुर तथा पंडित बसंत काबरा जैसे अनेक श्रेष्ठ कलाकारों को शिक्षित कर प्रतिष्ठित बनाया। उनकी शिक्षण-पद्धति में श्रवण, मनन, चिंतन और अंतर्मुख अभ्यास को प्रमुख स्थान प्राप्त था। वे शिष्यों के वादन में सूक्ष्म त्रुटियों, भाव-अभाव या तान-पद्धति की कठिनाइयों पर अत्यंत सावधानी से ध्यान देती थीं। गुरु के रूप में वे संगीत की शुद्धता और परंपरा के प्रति निष्ठा पर विशेष बल देती थीं।

३. परंपरा का संरक्षण:-

अन्नपूर्णा देवी ने मैहर घराने की बहुवाद्य परंपरा के संरक्षण हेतु अपना जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने स्वयं सार्वजनिक प्रस्तुतियों से दूर रहकर घराने के ज्ञान-दीप को शिष्यों के माध्यम से प्रज्वलित रखा। अपने पिता की गुरु-परंपरा को उन्होंने अत्यंत निष्ठा और अनुशासन से आगे बढ़ाया। संगीत की व्यावसायिकता से दूरी बनाए रखना, प्रसिद्धि से परे रहना और 'साधना ही सेवा है' इस आदर्श को जीवन में उतारना–इन गुणों ने उनके व्यक्तित्व को प्रेरणादायी बना दिया।

४. वैयक्तिक जीवन और संगीत:-

रविशंकर से विवाह के पश्चात उन्होंने कुछ समय तक संगीत-संगति की, किंतु बाद में अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित की। उन्होंने स्वयं को पूर्णतः अध्यात्म और संगीत-साधना को समर्पित कर दिया। वे प्रसिद्धि के प्रकाश से दूर रहकर एक शांत गुरुकुल की भाँति संगीत-साधना करती रहीं। उन्होंने केवल शिष्य ही नहीं, बल्कि उनके आत्मिक विकास का भी निर्माण किया। उनके शिष्य उन्हें साक्षात् सरस्वती का स्वरूप मानते हैं। उनके योगदान की मान्यता स्वरूप उन्हें पद्मभूषण तथा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया, किंतु वे पुरस्कारों की अपेक्षा साधना और आंतरिक शांति को अधिक महत्त्व देती थीं।

विदुषी केसरबाई केरकर:-

1. प्रारंभिक जीवन और संगीत की ओर प्रवृत्तिL:-

केसरबाई केरकर का जन्म गोवा क्षेत्र में एक साधारण परिवार में हुआ। बाल्यकाल से ही उनमें संगीत के प्रति गहरी रुचि और स्वाभाविक स्वर-सामर्थ्य दिखाई देने लगा था। उस समय समाज में महिला गायिकाओं के प्रति दृष्टिकोण पूर्णतः सम्मानजनक नहीं था, विशेषकर शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में प्रतिष्ठा अर्जित करना अत्यंत कठिन था।

इन सामाजिक परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने संगीत को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात वे जयपुर-अतरौली घराने के महान आचार्य उस्ताद अल्लादिया खान की शरण में पहुँचीं। यह उनके जीवन का निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ।

2ण कठोर तालीम और साधना:-

जयपुर-अतरौली घराना अपनी जटिल राग-संरचनाओं, विलक्षण संकर रागों और लयात्मक अनुशासन के लिए प्रसिद्ध है। इस घराने की तालीम अत्यंत कठोर और अनुशासित मानी जाती है। केसरबाई ने दीर्घकाल तक अत्यंत परिश्रम और धैर्य के साथ तालीम ग्रहण की। उनकी साधना केवल रागों के अभ्यास तक सीमित नहीं थी, बल्कि स्वर की शुद्धता, उच्चारण की स्पष्टता, लय पर नियंत्रण और राग के भावात्मक विस्तार तक विस्तृत थी। वे प्रतिदिन कई घंटों का नियमित रियाज़ करती थीं। गुरु की अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिए उन्होंने आत्मसंयम और अनुशासन को जीवन का अंग बना लिया।

3. गायकी की विशेषताएँ:-
केसरबाई केरकर की गायकी में निम्न प्रमुख विशेषताएँ देखी जाती हैं:
(क) विलंबित ख्याल की गंभीरता
वे राग को अत्यंत धैर्यपूर्वक विलंबित लय में विकसित करती थीं। आलाप की क्रमिक प्रस्तुति में राग की संरचना स्पष्ट रूप से उभरकर आती थी।
(ख) जटिल रागों पर अधिकार
जयपुर-अतरौली घराने के दुर्लभ और संकर रागों–जैसे बसंती केदार, ललित पंचम, खट आदि–की प्रस्तुति में उनका अद्वितीय अधिकार था। वे राग की शास्त्रीय मर्यादा को बनाए रखते हुए उसकी आंतरिक जटिलता को सहज रूप से प्रस्तुत करती थीं।
(ग) तान और लयकारी
उनकी तानों में तीव्रता के साथ स्पष्टता होती थी। वे जटिल लय-पैटर्न को संतुलन और आत्मविश्वास से प्रस्तुत करती थीं। उनकी लयकारी में गणनात्मक दृढ़ता और कलात्मक संतुलन दोनों दिखाई देते थे।
(घ) स्वर की गरिमा
उनकी आवाज़ में दृढ़ता और गाम्भीर्य था। उन्होंने यह सिद्ध किया कि स्त्री-स्वर केवल कोमलता का पर्याय नहीं, बल्कि शक्ति, स्थिरता और बौद्धिक परिपक्वता का भी प्रतीक हो सकता है।

4. मंचीय व्यक्तित्व और प्रतिष्ठा:-
केसरबाई केरकर की मंचीय उपस्थिति अत्यंत गरिमामयी थी। वे प्रस्तुति के दौरान पूर्ण एकाग्रता और आत्मविश्वास बनाए रखती थीं। उन्होंने देश के प्रमुख संगीत सम्मेलनों और आकाशवाणी के प्रसारणों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई।

उनकी ग्रामोफोन रिकॉर्डिंग्स ने उन्हें व्यापक लोकप्रियता दिलाई। उनकी प्रस्तुतियाँ आज भी शास्त्रीय संगीत के विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं के लिए आदर्श मानी जाती हैं।उन्हें पद्मभूषण तथा संगीत नाटक अकादमी सम्मान से अलंकृत किया गया, जो उनके सांगीतिक योगदान की आधिकारिक मान्यता है।

5. स्त्री-स्वायत्तता और सांगीतिक नेतृत्व:-
उस कालखंड में महिला कलाकारों को सामाजिक पूर्वाग्रहों का सामना करना पड़ता था। किंतु केसरबाई ने अपने आत्मसम्मान और कठोर साधना के बल पर यह सिद्ध किया कि स्त्री भी शास्त्रीय संगीत के उच्चतम मानकों को प्राप्त कर सकती है।

उन्होंने किसी प्रकार का कलात्मक समझौता स्वीकार नहीं किया। उनके लिए शास्त्रीयता सर्वोपरि थी। इस दृढ़ता ने उन्हें केवल एक महान गायिका ही नहीं, बल्कि सांगीतिक नेतृत्व का प्रतीक बना दिया।

6. सांस्कृतिक प्रभाव और विरासत:-
केसरबाई केरकर ने जयपुर-अतरौली घराने की परंपरा को नई प्रतिष्ठा प्रदान की। उनकी शैली ने आने वाली पीढ़ियों को राग की संरचनात्मक स्पष्टता, लयात्मक अनुशासन और शास्त्रीय मर्यादा का महत्व समझाया।

उनकी विरासत केवल रिकॉर्डिंग्स तक सीमित नहीं है; वह शास्त्रीय संगीत की उस चेतना में जीवित है, जो परंपरा, अनुशासन और आत्मविश्वास पर आधारित है।

## निष्कर्ष:-

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के इतिहास में अन्नपूर्णा देवी और केसरबाई केरकर का योगदान केवल कलात्मक उपलब्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्त्री-स्वायत्तता, साधना और सांस्कृतिक नेतृत्व की गहन अभिव्यक्ति है। दोनों ने अपने-अपने मार्ग से यह सिद्ध किया कि शास्त्रीय परंपरा में स्त्री की भूमिका गौण नहीं, बल्कि केन्द्रीय और निर्णायक हो सकती है।

अन्नपूर्णा देवी ने मौन साधना, गुरु-परंपरा के संरक्षण और शिष्यों के निर्माण के माध्यम से नेतृत्व का एक अंतर्मुखी और आध्यात्मिक रूप प्रस्तुत किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि संगीत केवल प्रदर्शन नहीं, बल्कि आत्मानुशासन और आंतरिक परिष्कार की प्रक्रिया है। सार्वजनिक मंचों से दूरी बनाकर भी उन्होंने ज्ञान की अखंड ज्योति को जीवित रखा। उनका जीवन यह दर्शाता है कि वास्तविक प्रभाव प्रसिद्धि से नहीं, बल्कि गहन साधना और मूल्यनिष्ठा से उत्पन्न होता है।

दूसरी ओर, केसरबाई केरकर ने सार्वजनिक मंच पर शास्त्रीय गरिमा, रागदारी की जटिलता और स्वर-अधिकार के माध्यम से यह स्थापित किया कि महिला कलाकार किसी भी प्रकार की सांगीतिक संरचना को पूर्ण बौद्धिक और तकनीकी अधिकार से प्रस्तुत कर सकती हैं। उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों के मध्य अपनी प्रतिभा और आत्मविश्वास से सम्मान अर्जित किया। उनकी गायकी में अनुशासन, स्पष्टता और संरचनात्मक दृढ़ता ने शास्त्रीय संगीत को नई ऊँचाई प्रदान की।

दोनों विदुषियों का जीवन यह दर्शाता है कि नेतृत्व केवल बाह्य दृश्यता में नहीं, बल्कि अपने कर्म, दृष्टि और निष्ठा में निहित होता है। एक ने मौन साधना से और दूसरी ने सार्वजनिक प्रस्तुति से परंपरा को सशक्त किया–परंतु दोनों का लक्ष्य समान था: शास्त्रीय संगीत की शुद्धता और गरिमा का संरक्षण। इस प्रकार, इन दोनों महान कलाकारों ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में स्त्री की स्वतंत्र और सम्मानित उपस्थिति को स्थायी स्वर प्रदान किया। उनका योगदान आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा, अनुशासन और सांस्कृतिक चेतना का आधार बना रहेगा।

## संदर्भ सुची :-


1) शास्त्री, सुनील. (2014). सूर योगिनीचे सुरोपानिषद्. रोहित अक्षर साहित्य.
2) झा, अपर्णा. (2015). अन्नपूर्णा. पद्मगंधा प्रकाशन.
3) रानडे, अशोक द. (2011). मला भावलेले संगीतकार. राजहंस प्रकाशन.
4) फाटक, किरण. (2011). प्रतिभावंत. संस्कार प्रकाशन.